प्रफुल्ल कोलख्यान

ओ अनागत शिशु तुम जरा किलको तो

लौट आयेगा धरती के पाँव के पाँव में
खोया हुआ विश्वास
बछड़े की आवाज सुन दौड़ती-हुमकती हुई
लौटती गाय की तरह

चिता की लपट मद्धम न पड़ जाये
और उजाला किये जाने का भरम बना रहे
इसका खयालकर, तेजी से सु ल गा ये जा रहे हैं जंगल

जंगल कुहरे और चाँदनी के बीच
सुन्न हवा में गोलियाँ उड़ रही है
परिंदों के पंख के साथ बंधे नारों के साथ

ओ अनागत शिशु तुम जरा किलको तो
अपनी मुटिठयों को धँसाते हुए
आसमान के क्रूर हृदय में
तुम्हारे लाल-ला होठ के बीच से निकले
दूधिया उजास से जी उठेगा सूरज
लौट आयेगा धरती के पाँव के पाँव में
खोया हुआ विश्वास
बछड़े की आवाज सुन दौड़ती-हुमकती हुई
लौटती गाय की तरह

ओ अनागत शिशु तुम जरा किलको तो !